ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

त्वमस्माकं तव स्मसि।

ऋग्वेद 8/92/32

हे प्रभो! तू हमारा है और हम तेरे हैं।

O God! You are our all in all & we are your divine children, you are ours and we are yours.

वर्ष 39, अंक 47 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 26 सितम्बर, 2016 से रविवार 2 अक्तूबर, 2016
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश का प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

आर्यसमाज की उन्नति एवं वैदिक संस्कृति का प्रचार हो हमारा लक्ष्य – आचार्य देवव्रत

महाशय धर्मपाल जी एवं दिल्ली सभा के विशेष सहयोग से वेद प्रचार वाहन का लोकार्पण : गांव-गांव गूंजे वैदिक नांद

भयंकर वर्षा भी न डिगा सकी आर्यजनों का साहस : शोभायात्रा में डटे रहे बालक, वृद्ध, युवा और मातृशक्ति

वेद की भूमि होने के कारण ही हिमाचल प्रदेश कहलाता थी देवभूमि : पुनः वेदभूमि बनाने के लिए आर्यसमाज को और अधिक कार्य करना होगा – विनय आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा हि. प्रदेश का प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन दिनांक 17-18 सितम्बर,2016 को सुन्दरनगर में बड़ी धूमधाम से आयोजित किया गया। इसमें हिमाचल प्रदेश के सभी आर्य समाजों से भारी संख्या में आर्य जनों का समूह उमड़ कर आया। इस अवसर पर लगभग 100 आर्यवीरों का आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर भी रखा गया जिसमें आर्य विद्यालय कण्डाघाट कुल्लू एवं जोगिन्द्र नगर के छात्रों ने भाग लिया। दिनांक 17 सितम्बर को राष्ट्र चेतना सम्मेलन आयोजित किया गया जिसके मुख्य अतिथि श्री ठाकुर सोहन लाल जी, मुख्य संसदीय सचिव पंचायती राज हि. प्र. थे। उन्होनें चार लाख रुपये की राशि आर्य समाज सुन्दरनगर को प्रदान की। रात्रि के समय राष्ट्र रक्षा सम्मेलन आचार्य आर्य नरेश जी की अध्यक्षता में रखा गया। दिनांक 18 सितम्बर को आर्य सम्मेलन के मुख्य अतिथि हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल

– शेष पृष्ठ 5 पर

अगले वर्ष के महासम्मेलन तक हिमाचल की आर्यसमाजें 50 से 70 करने का लक्ष्य

प्रत्येक नई आर्यसमाज की स्थापना के लिए विशेष सहयोग देगी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

प्रान्तीय सम्मेलन हिमाचल को सम्बोधित करते राज्यपाल आचार्य देवव्रत, दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य, एवं श्री राजेन्द्र विद्यालंकार।
मंचस्थ श्री प्रबोध चन्द्र सूद जी, विनय आर्य जी, आचार्य देवव्रत जी, राजेन्द्र विद्यालंकार जी, आचार्य आर्यनरेश जी एवं अन्य अतिथिगण तथा उपस्थित आर्यजन।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नेपाल : 20-22 अक्टूबर 2016 टुंडिखेल, काठमाण्डु

नेपाल की महामहिम राष्ट्रपति बिद्यादेवी भण्डारी करेंगी उद्घाटन

आर्यों में अपार उत्साह : चलो आर्यो! चलो नेपाल

समस्त संन्यासियों, गुरुकुलों के आचार्यों तथा ब्रह्मचारी शिक्षकों के लिए विशेष सूचना

सार्वदेशिक सभा द्वारा नेपाल सम्मेलन में भाग लेने हेतु आर्यसमाज के समस्त संन्यासीवृन्दों, गुरुकुलों के आचार्यों एवं ब्रह्मचारी शिक्षकों के लिए विशेष छूट देने का निर्णय लिया गया है। आप सभी को यात्रा नं. 2(ए) 36500/- आधी कीमत पर केवल 18250/- रुपये में दी जाएगी। यदि आप इस सुविधा का लाभ लेना चाहते हैं तो यथाशीघ्र आवेदन करें। आवेदन की अन्तिम तिथि 5/10/2016 है।

नोट : चार दिन की यात्रा 1(ए) के लिए अब कोई सीट खाली नहीं हैं। इस यात्रा हेतु आवेदन न करें। – सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान, 9824072509

नेपाल सम्मेलन में भाग लेने के इच्छुक महानुभाव ध्यान दें : नेपाल सम्मेलन की तिथियों में नेपाल जाने के लिए हवाई जहाज की टिकटें काफी ऊंची कीमत पर मिल रहीं हैं। यदि आप सम्मेलन में भाग लेने के लिए स्वयं जाना चाहते हैं तो सार्वदेशिक सभा के माध्यम से केवल 15000/- रुपये में एयर टिकट प्राप्त कर सकते हैं। अन्तिम तिथि 5/10/2016 है। – सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान, 9824072509

वेद-स्वाध्याय

प्रवाह से बचें

य ई चकार न सो अस्य वेद य ई ददर्श हिरुगिन्नु तस्मात्।
स मातुर्योना परिवीतो अन्तर्बहुप्रजा निऋतिमा विवेश।। -ऋ. 1/164/32
ऋषिः **दीर्घतमा।।** देवता- **विश्वेदेवाः।।** छन्दः **त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ - **यः**=यह मनुष्य **ईम्**=यह जो कुछ **चकार**=करता है **अस्य**=इस किये को **सः न वेद**=वह नहीं जानता। **यः**=वह मनुष्य **ई ददर्श**=यह जो कुछ देखता है वह **तस्मात्**=उस देखने वाले मनुष्य से **नु हिरुक् इत्**=निःसन्देह छिपा हुआ ही है। **सः**=ऐसा वह मनुष्य **मातुः योना अन्तः**= माता के गर्भाशय में **परिवीतः**=(झिल्ली से और अज्ञान से) ढका हुआ **बहुप्रजाः**= बार-बार जन्म लेता हुआ और बच्चे पैदा करता हुआ **निऋतिम् आविवेशः**=बड़े घोर कष्ट में प्रविष्ट होता जाता है।

विनय- मनुष्य संसार-सागर में डूबता जाता है। +मनुष्य ज्यों-ज्यों 'बहुप्रजा' होता जाता है त्यों-ज्यों यह 'निऋति' में-घोर कष्ट में-पड़ता जाता है। विषय-ग्रस्त हुआ मनुष्य इस संसार में एक ही कार्य समझता है, अपने बच्चे पैदा करना एवं, प्रकृति में अपने विस्तार को नाना प्रकार बढ़ाता जाता है। इसीलिए वह बार-बार जन्म पाता है, बार-बार जन्म के घोर कष्टों को अनुभव करता है। ऋषि लोगों ने देखा है कि माता की योनि में आये हुए जीव को बार-बार बड़ा भारी मानसिक क्लेश भोगना पड़ता है। उस समय वह जीव केवल झिल्ली से ढका हुआ नहीं होता, किन्तु घोर अज्ञान से भी ढका हुआ होता है, क्योंकि 'बहुप्रजाः' के मार्ग पर जाना अज्ञान से ढके जाने से ही होता है। मनुष्य पागल इसलिए है, क्योंकि वह जो दिन-रात अन्धाधुन्ध काम करता है उसे वह जानता नहीं, यूँ ही करता जाता है। मनुष्य खाना-पीना, चलना- फिरना, प्रेम करना, द्वेष करना आदि जो कुछ करता है उसे वह कुछ भी नहीं जानता कि मैं यह क्या कर रहा हूँ, क्यों कर रहा हूँ, इसका क्या प्रभाव होगा। वह नहीं जानता कि इसका ही फल उसे भोगना होगा। वह नहीं जान पाता कि पहले जन्मों में वह न जाने क्या-क्या कर चुका है। अन्धाधुन्ध वह करता जाता है। इसी प्रकार का उसका सब संसार को देखना है। संसार में वह मनुष्य स्त्री, पशु, पहाड़, नदी, आकाश, सभा, समाज, बड़े-बड़े आनन्द दायक दृश्य और बड़े-बड़े रुलाने वाले दृश्य, इन सबको सोते-जागते देखता जाता है, परन्तु वास्तव में वह इन किन्हीं भी वस्तुओं को नहीं देखता। ये सब वस्तुएं उससे वास्तव में छिपी ही रहती हैं, निःसन्देह छिपी ही रहती हैं। वह देखता हुआ भी किसी भी वस्तु का तत्त्व नहीं देख पाता। इसीलिए वह 'बहुप्रजाः' होने के- प्रकृति में ग्रस्त होने के-मार्ग का अवलम्बन करता है और 'निऋति' में पड़ता जाता है। निऋति1 (पृथिवी) के इस अन्धकार में धँसते जाने की जगह, मनुष्य 'द्यौः' के प्रकाश की ओर जाने लगे, यदि वह इस संसार में जो कुछ करे उसे जानने लगे और जो कुछ देखे उसे साक्षात् करने लगे तभी उसका कल्याण है।

1. निऋतिः=(1) घोर कष्ट, (2) पृथिवी। ये दोनों अर्थ निऋति शब्द के होते हैं। +मनुष्य 'का हुआ' (परिवीत) होने से ही इस संसार में पागल तथा अंधे की भांति रहता है।

- आचार्य अभयदेव जी
साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

जवाब दे पाकिस्तान : बुरहान हीरो है तो फैजुल्लाह आतंकवादी कैसे?

संयुक्त राष्ट्र महासभा में कश्मीर के मुद्दे पर पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ ने कहा है कि बुरहान वानी एक नौजवान नेता थे जिनकी भारतीय सेना ने जान ले ली, वो हालिया कश्मीरी स्वतंत्रता के प्रतीक के तौर पर उभरे थे जोकि एक लोकप्रिय और शांतिपूर्ण आजादी मांगने का अभियान है जिसकी अगुवाई कश्मीर के नौजवान और बुजुर्ग, पुरुष और महिला कर रहे हैं। नवाज अपने भाषण में कश्मीर के मुद्दे को कश्मीर की स्वतंत्रता से जोड़कर बता रहे थे जबकि बीते महीने नवाज शरीफ ही पाकिस्तान में नारे लगा रहे थे कि कश्मीर बनेगा पाकिस्तान। यदि कश्मीर पाकिस्तान बनेगा तो पाकिस्तान की तरफ से कश्मीर की आजादी का औचित्य क्या है? हालाँकि भारतीय विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता विकास स्वरूप ने पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शरीफ को जवाब देते हुए कहा ''संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिजबुल चरमपंथी बुरहान वानी का शरीफ द्वारा जो महिमामंडन किया गया, इससे पाकिस्तान का चरमपंथ से संबंध जाहिर होता है।'' सब जानते हैं बुरहान वानी हिजबुल मुजाहिद्दीन का एक घोषित कमांडर था जोकि एक आतंकी संगठन है।

नवाज शरीफ के भाषण पर अमेरिका में रहे पाकिस्तान के पूर्व राजदूत हुसैन हक्कानी के अनुसार नवाज शरीफ के भाषण को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बहुत ज्यादा तव्वजो नहीं मिली. क्योंकि संयुक्त राष्ट्र में 1947 से लोग ये बात सुन रहे हैं। रह गया आतंकवाद का मामला तो उस पर पूरी दुनिया सहमत है कि आतंकवाद का कोई औचित्य नहीं है। पाकिस्तान को अब ये कारोबार बंद करना होगा। दुनिया सब कुछ जानती है। ''पाकिस्तान का जिक्र करते हुए हक्कानी ने कहा कि पाकिस्तान के आतंकवाद पर अब दुनिया खुल कर बोलती है।'' यदि इसके बाद भी पाकिस्तान आतंकवाद से पल्ला झाड़ता है तो ये पाकिस्तान के लिए पछतावे के सिवा कुछ नहीं होगा। सर्वविदित है कि दिसम्बर 2014 पाकिस्तान के पेशावर में एक स्कूल में आतंकी संगठन तहरीक-ए-तालिबान द्वारा करीब 141 बच्चे मारे गए थे जबकि पाक सुरक्षाबलों की कार्यवाही में सभी 6 हमलावर भी मारे गए थे। उस समय भारत में भी शोक व्यक्त किया गया था। एक अच्छे पड़ोसी का धर्म निभाते हुए हमने स्कूलों की एक दिन छुट्टी के साथ पूरे भारत ने इस दुःख की घड़ी में पाकिस्तान का साथ दिया था। तब भारत ने तहरीक-ए- तालिबान के कमांडर ''फेजुल्लाह'' जोकि इस हमले का मास्टर माइंड था उसे मासूम और युवा नेता कहने के बजाय आतंकी ही कहा था। यदि आज पाकिस्तान की नजर में हिजबुल आतंकी बुरहान वानी मासूम नेता है, तो फिर उत्तरी वजीरिस्तान में अपनी आजादी की लड़ाई लड़ रहे तहरीक-ए-तालिबान के लड़ाके भी मासूम नेता कहे जा सकते हैं? जिन पर पाकिस्तान की सेना लड़ाकू विमानों से बम बरसा रही है।

यह कोई नई बात नहीं है। पाकिस्तान हमेशा से विश्व समुदाय के सामने आतंक के प्रति दो मुखोटे रखता रहा है। जिसे पाकिस्तान ने गुड तालिबान और बैड तालिबान में विभक्त कर परिभाषित किया। मसलन जो आतंकवादी पाकिस्तान से बाहर हमले को अंजाम दे वो अच्छा तालिबान और पाकिस्तान में मासूम लोगों की हत्या करे वो बुरा तालिबान। शायद इसी वजह से आज विश्व में जब भी कहीं आतंक पर चर्चा होती है तो उस चर्चा में पाकिस्तान का नाम भी जरूर लिया जाता है। यह बात किसी से छिपी नहीं है कि कई अंतर्राष्ट्रीय और क्षेत्रीय आतंकी पाकिस्तान की पनाह में मारे जा चुके हैं, जबकि कईयों का अभी भी सबसे सुरक्षित ठिकाना पाकिस्तान आज भी बना हुआ है। जिनमें कई आतंकी संगठनों का रवैया पाकिस्तान के प्रति उदार रहा है। जबकि तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान का रुख शुरू से कड़ा रहा है। उसका मानना है कि पाकिस्तान अमेरिका का गुलाम है और उसके नेता देश के गद्दार हैं। यही वजह है कि यह संगठन पाकिस्तानी नेताओं का दुश्मन नंबर वन है। एक अनुमान के अनुसार इसके करीब 30000 से 35000 सदस्य हैं। प्रतिबंध लगने के बाद अल-कायदा, सिपह-ए-साहबा, लश्कर-ए-झांगवी, लश्कर-ए-तैयबा, जैश-ए- मोहम्मद, हरकत-उल-मुजाहिद्दीन और हरकत-उल-जिहाद-अल-इस्लामी जैसे कई बड़े आतंकी संगठन भी पाकिस्तानी तालिबान में शामिल हो गए हैं।

दरअसल, पाकिस्तान ने पिछली सदी के 80 के दशक में आतंक के जहरीले नाग को दूध पिलाना शुरू किया था। पाकिस्तानी शासकों ने अपनी महत्वाकांक्षाओं को इन विवशताओं के समीकरण में मिलाकर आतंक को न सिर्फ शह दी बल्कि उसको पाला पोसा भी। जिस कारण आज पाकिस्तान आतंक के अपने ही जाल में बुरी तरह फंस गया है। उसने जो गड्ढा पूरी दुनिया के लिए खोदा था। अब उसमें खुद ही आ धंसा है। लेकिन इन सबके बावजूद भी पाकिस्तान भारत के साथ मिलकर आतंकवाद के विरुद्ध ईमानदाराना लड़ाई लड़ने के लिए तैयार नहीं है। यदि भारत में आतंकी पठानकोट, गुरदासपुर, मुंबई या उड़ी में हमला करते हैं, तो पाकिस्तान की नजर में वो हीरो होते हैं, किन्तु वहीं आतंकी जब लाहौर के पार्क में धमाका करते हैं, पेशावर या बाघा बोर्डर पर हमला कर पाकिस्तानी अवाम को मारते हैं तो आतंकवादी या बुरे तालिबानी हो जाते हैं। क्यों? गुलाम कश्मीर में जब कोई पाकिस्तान से अपने भू-भाग से मुक्ति चाहता है तो वह आतंकी होता है किन्तु जब कोई जिहाद की आड़ लेकर भारतीय सेना या समुदाय पर हमला करता है, तो उसे आजादी का परवाना कहा जाता है, युवा नेता कहा जाता है। यह दोहरा मापदंड किसलिए? हो सकता है इसी कारण लादेन और मुल्ला मंसूर जैसे आतंकी, जो अमेरिका में 3 हजार निर्दोष लोगों के हत्यारे थे वे भले ही समस्त विश्व के आतंकी रहे हों पर पाकिस्तान के हीरो होंगे।

पाकिस्तान चाहे तो बर्मा से सीख ले सकता है उसने किस तरह पिछले वर्ष नागालैंड में भारतीय सेना के 18 जवानों की हत्या के बाद अपने देश में भारत को कार्यवाही के लिए खुली छूट दी थी। जिस कारण वहां आतंकी कैम्प तबाह हुए थे। किन्तु पाकिस्तान इस मामले में भारत के खिलाफ आतंकियों को न केवल अपनी जमीन और हथियार उपलब्ध कराता बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उनकी पैरोकारी कर उन्हें हीरो बताता है। हालाँकि पाकिस्तान की यह परम्परा कोई नई नहीं है। पाक शासकों की भारत के प्रति यह दुर्भावना पुरानी है। पाकिस्तान ने जिस तरह अपनी मिसाइल और अधिकतर युद्धक सामग्री को उन लोगों के नाम पर बनाया है जो कभी भारत को लूटने आया करते थे। उसने गौरी, गजनवी आदि मिसाइल का निर्माण किया। इससे यह साबित होता है कि इस दुर्भावना का शिकार सभी पूर्व शासक भी रहे हैं जो पाकिस्तान की राजनीति को विरासत में मिलती है। पाकिस्तान ने आज तक किसी भी मकान, मस्जिद या किसी सेवा को दाराशिकोह जैसे धर्मनिरपेक्ष लोगों का नाम नहीं दिया। क्या दाराशिकोह भी बुरा तालिबान था? और गौरी, गजनवी औरंगजेब अच्छे तालिबानी हीरो? भारत सरकार को अब समझ जाना चाहिए कि सुरक्षा के मोर्चे पर कुछ नहीं बदला है। पाकिस्तान में भारत के प्रति दुर्भावना बहुत गहरी है जो कुछ मुलाकातों से समाप्त नहीं हो सकती है। इससे आगे भी पाकिस्तान का दोहरा खेल अब उससे भी अधिक घिनौना होगा। कौन विश्वास करेगा कि पाकिस्तान सरकार और खुफिया सेवा को ओसामा बिन लादेन के छिपे होने की खबर नहीं थी? पाकिस्तान आज विश्व के लिए विस्फोटक बना हुआ है, जो भारत समेत पूरे विश्व के लिए खतरनाक होता जा रहा है।

- सम्पादक

भारत में ईसाई मत के कारनामे

– डॉ. विवेक आर्य

भारत देश में ईसाई मत का आगमन कब हुआ। यह कुछ निश्चित नहीं है। एक मान्यता के अनुसार 52 AD में संत थॉमस का आगमन दक्षिण भारत में हुआ। उनके प्रभाव से ईसाई बने भारतीय अपने आपको सीरियन ईसाई कहते हैं। ईसाई इतिहासकारों की इस मान्यता में अनेक कल्पनायें समाहित हैं।

[i] वास्को दे गामा के 1498 में भारत आगमन के साथ ईसाई व्यापारी के रूप में भारत आने लगे। भारत में ईसाईयों के इतिहास में दो हस्तियों के कारनामे सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं। पहले फ्रांसिस ज़ेवियर और दूसरे रोबर्ट दि नोबिली। पुर्तगालियों के भारत आने और गोवा में जम जाने के बाद ईसाई पादरियों ने भारतीयों का बलात् धर्म-परिवर्तन करना शुरू कर दिया।

[ii] इस अत्याचार को आरम्भ करने वाले ईसाई पादरी का नाम फ्रांसिस जेवियर (Francis Xavier, 7 April 1506–3 December 1552) था। फ्रांसिस जेवियर ने हिन्दुओं को धर्मान्तरित करने का भरसक प्रयास किया मगर उसे आरम्भ में विशेष सफलता नहीं मिली। उसने देखा कि उसके और ईसा मसीह की भेड़ों की संख्या में वृद्धि करने के मध्य हिन्दू ब्राह्मण सबसे अधिक बाधक हैं। फ्रांसिस ज़ेवियर के अपने ही शब्दों में ब्राह्मण उसके सबसे बड़े शत्रु थे क्योंकि वे उन्हें धर्मांतरण करने में सबसे बड़ी रुकावट थे। फ्रांसिस जेवियर ने इस समस्या के समाधान के लिए ईसाई शासन का आश्रय लिया। वाइसराय द्वारा यह आदेश लागू किया गया कि सभी ब्राह्मणों को पुर्तगाली शासन की सीमा से बाहर कर दिया जाये । गोवा में किसी भी स्थान पर नए मंदिर के निर्माण एवं पुराने मंदिर की मरम्मत करने की कोई इजाजत नहीं होगी।

[iii] इस पर भी असर न देख अगला आदेश लागू किया गया कि जो भी हिन्दू ईसाई शासन के मार्ग में बाधक बनेगा उसकी सम्पति जब्त कर ली जाएगी। इससे भी सफलता न मिलने पर अधिक कठोरता से अगला आदेश लागू किया गया। राज्य के सभी ब्राह्मणों को धर्म परिवर्तन कर ईसाई बनने का अथवा देश छोड़ने का फरमान जारी हुआ। इस आदेश के साथ हिन्दुओं विशेष रूप से ब्राह्मणों पर भयंकर अत्याचार आरम्भ हो गये। हिन्दू पंडित और वैद्य पालकी पर सवारी नहीं कर सकता था। ऐसा करने वालों को दण्डित किया जाता था। यहाँ तक जेल में भी ठूंस दिया जाता था।

[iv] हिन्दुओं को ईसाई बनने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था। ईसाई बनने पर राज संरक्षण की प्राप्ति होना एवं हिन्दू बने रहने पर प्रताड़ित होने के चलते हजारों हिन्दू ईसाई बन गए।

.....फ्रांसिस जेवियर के शब्दों में परिवर्तित हुए हिन्दुओं को ईसाई बनाते समय उनके पूजा स्थलों को, उनकी मूर्तियों को तोड़ते देख उसे अत्यंत प्रसन्नता होती थी। हजारों हिन्दुओं को डरा धमका कर, अनेकों को मार कर, अनेकों को जिन्दा जला कर, अनेकों की संपत्ति जब्त कर, अनेकों को राज्य से निष्कासित कर अथवा जेलों में डाल कर ईसाई मत ने अपने आपको शांतिप्रिय एवं न्यायप्रिय सिद्ध किया।.....

[v] हिन्दुओं को विवाह आदि पर उत्सव करने की मनाही की गई। ईसाई शासन के अत्याचारों के चलते हिन्दू बड़ी संख्या में पलायन के लिए विवश हुए।

[vi] फ्रांसिस जेवियर के शब्दों में परिवर्तित हुए हिन्दुओं को ईसाई बनाते समय उनके पूजा स्थलों को, उनकी मूर्तियों को तोड़ते देख उसे अत्यंत प्रसन्नता होती थी। हजारों हिन्दुओं को डरा धमका कर, अनेकों को मार कर, अनेकों को जिन्दा जला कर, अनेकों की संपत्ति जब्त कर, अनेकों को राज्य से निष्कासित कर अथवा जेलों में डालकर ईसाई मत ने अपने आपको शांतिप्रिय एवं न्यायप्रिय सिद्ध किया।

[vii] हिन्दुओं पर हुए अत्याचार का वर्णन करने भर में लेखनी कांप उठती है। गौरी और गजनी का अत्याचारी इतिहास फिर से सजीव हो उठा था।

[viii] विडम्बना देखिये कि ईसा मसीह के लिए भेड़ों की संख्या में वृद्धि के बदले फ्रांसिस जेवियर को ईसाई समाज ने संत की उपाधि से नवाजा गया। गोवा प्रान्त में एक गिरिजाघर में फ्रांसिस जेवियर की अस्थियां सुरक्षित रखी गई हैं। हर वर्ष कुछ दिनों के लिए इन्हें दर्शनार्थ रखा जाता है। सबसे बड़ी विडम्बना देखिये इनके दर्शन एवं सम्मान करने गोवा के वे ईसाई आते हैं जिनके पूर्वज कभी हिन्दू थे एवं उन्हें इसी ज़ेवियर ने कभी बलात् ईसाई बनाया था।

रोबर्ट दि नोबिली नामक ईसाई का आगमन 1606 में मदुरै, दक्षिण भारत में हुआ। उसने पाया कि वहां पर हिन्दुओं को धर्मान्तरित करना लगभग असंभव ही है। उसने देखा कि हिन्दू समाज में ब्राह्मणों की विशेष रूप से प्रतिष्ठा है। इसलिए उसने धूर्तता करने की सोची। उसने पारम्परिक धोती पहनकर एक ब्राह्मण का वेश धरा। जनेऊ, शिखा रखकर शाकाहारी भोजन करना आरम्भ कर दिया। उसने यह प्रचलित कर दिया कि वह सुदूर रोम से आया हुआ ब्राह्मण है। उसके पूर्वज भारत से रोम गए थे। उसने तमिल और संस्कृत भाषा में ग्रन्थ रचना करने का नया प्रपंच भी किया। इस ग्रन्थ को उसने **''वेद''** का नाम दिया। ब्राह्मण वेष धरकर नोबिली ने सत्संग करना आरम्भ कर दिया। उसके सत्संग में कुछ हिन्दू आने लग गए। धीरे-धीरे उसने सत्संग में ईसाई प्रार्थनाओं का समावेश कर दिया। उसके प्रभाव से अनेक हिन्दू ईसाई बन गए।

[ix] कालांतर में मैक्समूलर ने नोबिली के छदम **''वेद''**का रहस्य उजागर कर दिया। पाठक सोच रहे होंगे कि मैक्समूलर ने ऐसा क्यों किया। जबकि दोनों ईसाई थे। उत्तर सुनकर रोंगटे खड़े हो जायेंगे। नोबिली ईसाइयत के एक सम्प्रदाय रोमन कैथोलिक से सम्बंधित था जबकि मैक्समूलर प्रोटोस्टेंट सम्प्रदाय से सम्बन्धित था। दोनों के आपसी जलन और फूट ने इस भेद का भंडाफोड़ कर दिया। जहाँ पर धर्म का स्थान मजहब/मत मतान्तर ले लेते हैं वहां पर ऐसा ही होता है।

नोबिली को ईसाई समाज में दक्षिण भारत में धर्मान्तरण के लिए बड़े सम्मान से देखा जाता है। पाठक स्वयं विचार करें। भेष बदलकर धोखा देने वाला नकल करने वाला सम्मान के योग्य है अथवा तिरस्कार के योग्य है? प्रसिद्ध राष्ट्रवादी लेखक सीता राम गोयल द्वारा ईसाई समाज द्वारा हिन्दू भेष धारण करने, हिन्दू मंदिरों के समान गिरिजाघर बनाने, हिन्दू धर्मग्रंथों के समान ईसाई भजन एवं मंत्र बनाने, हिन्दू देवी-देवताओं के समान ईसा मसीह एवं मरियम की मूर्तियां बनाने, ईसाई शिक्षण संस्थान को गुरुकुल की भाँति नकल करने की अपने ग्रंथों में भरपूर आलोचना की है।

[x] विचार करें क्या ईसाईयों को अपने धर्म ग्रंथों एवं सिद्धांतों पर इतना अविश्वास है कि उन्हें नकल का सहारा लेकर अपने मत का प्रचार करना पड़ता है। धर्म की मूल सत्यता पर टिकी है न कि झूठ, फरेब, नकल और धोखे पर टिकी है।

भारत देश के विशाल इतिहास में ईसाईयों के अत्याचार, झूठ, धोखे से सम्बन्धित दो कारनामों का सत्य इतिहास मैंने आपके समक्ष रखा है। यह इतिहास उस काल का है जब भारत में अंग्रेजी हुकूमत की स्थापना नहीं हुई थी। पाठक कल्पना करें अंग्रेजों के संरक्षण में ईसाईयों ने कैसे-कैसे कारनामे करे होंगे।

बोध कथा

जैसा दृष्टिकोण, वैसा अन्त:करण

वीरान जंगल में एक सुन्दर मकान था। एक साधु ने उसे देखकर सोचा- 'कितना सुन्दर स्थान है यह! यहाँ बैठकर ईश्वर का ध्यान करूँगा।'

एक चोर ने उसे देखा तो सोचा-'वाह! यह तो सुन्दर स्थान है! चोरी का माल लाकर यहाँ रक्खा करूँगा।'

एक दुराचारी ने देखा तो सोचा-'यह तो अत्यन्त एकान्त स्थान है! दुराचार करने के लिए इससे उत्तम स्थान और कहाँ मिलेगा?''

एक जुआरी ने देखकर सोचा-'अपने साथियों को यहाँ लाऊँगा, यहाँ बैठकर हम जुआ खेलेंगे।'

अलग-अलग दृष्टिकोण होने के कारण एक ही मकान को प्रत्येक व्यक्ति ने अलग-अलग रूप से देखा। जैसा दृष्टिकोण बनाओगे, वैसा अन्त:करण बनेगा अवश्य। यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारा अन्त:करण अच्छा हो तो दृष्टिकोण अच्छा बनाओ।

सब जग ईश्वर-रूप है,
भला बुरा नहिं कोय।
जैसी जाकी भावना,
तैसा ही फल होय।।

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

प्रेरक प्रसंग

पं. लेखरामजी की लग्न देखिए

स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज ने बड़े परिश्रम से अपनी लौह लेखनी से धर्मवीर लेखरामजी का एक प्रेरणाप्रद जीवन-चरित्र लिखा और भी कई जीवन-चरित्र अन्य विद्वानों ने लिखे। इन पंक्तियों के लेखक ने भी 'रक्तसाक्षी पण्डित लेखराम' नाम से एक खोजपूर्ण जीवन-चरित्रों में उनके जीवन की कई महत्त्वपूर्ण घटनाएँ छपने से रह गई हैं। अभी गत वर्ष उनके पावन चरित्र का एक नया पहलू हमारे सामने आया।

पण्डितजी 'आर्यगजट' के सम्पादक थे तो वे बड़ी मार्मिक भाषा में अपनी सम्पादकीय टिप्पणियाँ लिखा करते थे। आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के समाचार पाकर बड़ी प्रेरणाप्रद टिप्पणी देकर पाठकों में नवीन उत्साह का संचार कर देते थे।

एक बार पण्डित आर्यमुनिजी पंजाब की उत्तर-पश्चिमी सीमा के किसी दूरस्थ स्थान पर प्रचार करने गये। वहाँ उनके प्रचार से वैदिक धर्म की छाप लोगों पर पड़ी। वहाँ प्रचार करके वे भेरा स्थान पर पधारे। वहाँ भी पण्डित आर्यमुनि की विद्वत्ता ने वैदिक धर्म की महत्ता का सिक्का लोगों के हृदयों पर जमाया। पण्डित लेखरामजी को यह समाचार पहुँचा तो आपने पण्डित आर्यमुनि की विद्वत्ता व कार्य की प्रशंसा करते हुए लिखा कि प्रशंसित पण्डितजी जेहलम आदि से भेरा पहुँचे। मार्ग में कितने ही और ऐसे महत्त्वपूर्ण स्थान व नगर हैं, जहाँ सधर्म के प्रकाश की बहुत आवश्यकता है। जिज्ञासु जन पवित्र वेद के सद्ज्ञान से लाभान्वित होना चाहते हैं। यदि हमारे मानीय पण्डितजी वहाँ भी प्रचार करने आते तो कितना अच्छा होता।'

देखा! अपने पूज्य विद्वान् के लिए पण्डित लेखराम के हृदय में कितनी श्रद्धा है और वैदिक धर्म के प्रचार के लिए कितनी तड़प है। एक जगह से दूसरी जगह पर जानेवाले प्रत्येक आर्य से धर्म दीवाना लेखराम यह अपेक्षा करता है कि वह मार्ग में सब स्थानों पर धर्मध्वजा फहराता जाए।

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

युद्ध तो अवश्य होगा!

रक्षा मामलों के विश्लेषक राहुल बेदी के मुताबिक, ''सेना इस हालिया हमले के जवाब देने के लिए आतुर है। इससे परमाणु हथियारों से लैस दोनों पड़ोसियों के बीच तनाव बढ़ जाएगा।'' तो सत्ताधारी भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता राम माधव ने कहा है कि भारत के ''तथाकथित रणनीतिक संयम रखने के दिन लद गए।'' सेना के पूर्व अफसरों ने सुर में सुर मिलाते हुए कहा कि भारत को पलटवार करना चाहिए। इसके जबाब में पाकिस्तान के पूर्व गृहमंत्री अब्दुल रहमान मलिक भारतीय प्रधानमंत्री के लिए अपशब्द बोलकर परमाणु हमले की धमकी दे रहे हैं। इस सारी उहापोह के बीच भारतीय जनता एक सवाल होठों पर लिए खड़ी है कि क्या युद्ध होगा? मैं आपको बता दूँ, जब कृष्ण अंतिम कोशिश के रूप में शांति संधि के लिए हस्तिनापुर, जा रहे थे तो द्रौपदी ने बड़ी ही व्याकुलता से श्रीकृष्ण से पूछा था कि 'हे केशव, तो अब' युद्ध नहीं होगा? कृष्ण ने उस समय द्रोपदी से कहा था तुम मुझ से ज्यादा ''दुर्योधन पर विश्वास रखो, वो मेरी हर कोशिश को नाकाम कर देगा, इसलिए, हे द्रौपदी, निश्चिंत रहो, युद्ध तो अवश्य ही होगा। तो यहाँ भी सब भारतीय लोग नरेंद्र मोदी से ज्यादा पाकिस्तान पर विश्वास रखें युद्ध तो अवश्य होगा। पर कैसे होगा इसका अभी सिर्फ आंकलन ही किया जा सकता है। किन्तु इसमें अहम और ज्यादा गंभीर सवाल पर यह सोचना है कि क्या भारत के पास यह क्षमता है कि वह पाकिस्तान के अंदर पहले से तय ठिकानों पर हमला कर दे या उसकी जमीन पर सीमित युद्ध छेड़ दे? सोशल मीडिया में इस पर बहस छिड़ी हुई है कि भारतीय वायु सेना को पाकिस्तान स्थित ठिकानों पर क्या अचूक और सटीक हमले करने चाहिए?'' पर ज्यादातर रक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि ऐसा करना आसान नहीं है, क्योंकि पाकिस्तान के पास हवाई सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम हैं। इस पर भी संदेह जताया जा रहा है कि क्या भारत ने गैर पारंपरिक शक्ति संतुलन की क्षमता विकसित की है।

युद्ध होगा या नहीं होगा? यह प्रश्न तो भविष्य के गर्भ में छिपा है, पर लोगों को सोचना होगा कि युद्ध न तो कोई तमाशा है और न ही कोई मनोरंजन का साधन। युद्ध में मासूम लोग मरते हैं, युद्ध से जमीने बंजर होती है, घायलों की कराह होती है, चारों ओर हाहाकार होती है, हर एक घटना के बाद भारत और पाकिस्तान की जनता युद्ध-युद्ध चिल्लाती है। कारण इन दोनों देशों ने अभी तक युद्ध देखा ही नहीं है। युद्ध के बारे में सिर्फ पढ़ा है। यदि युद्ध देखा भी है तो टीवी के सीरियल और फिल्मों में या फिर तीन-चार बार सीमा पर फौजी जंगे देखी हैं। युद्ध देखा है लाओस वियतनाम इराक ने या युद्ध की त्रासदी झेली है जापान ने उनसे पूछो क्या होता है युद्ध? यूरोप के देशों से पूछो क्या होता है युद्ध? हालाकि मैं ये नहीं कहता कि इस डर से नपुंसक बन कर जियो। नहीं! जैसी स्थिति हो वैसा प्रहार करो, जरूरी नहीं कि सभी युद्ध हथियारों से ही जीते जाते हों दुश्मन को भूखा मारकर भी युद्ध जीता जा सकता है! बहरहाल कुल मिलाकर विदेश नीति के संबंध में हमें यह समझने की जरूरत है कि पहले विश्व दो ध्रुवीय था, लेकिन 21वीं शताब्दी में पूरा विश्व एक दूसरे पर ज्यादा निर्भर है। दुश्मन की निर्भरता के रास्ते रोक कर भी उसे कमजोर, पंगु किया जा सकता है। समझोते तोड़े जा सकते है, संधियाँ भी एक तरफा समाप्त की जा सकती है, उस अवस्था में हम भले ही ना भी लड़ें पर भूगोल और परिस्थिति अपने शिकार को पकड़ लेती है। किसी भी देश की विदेश नीति उसके उसके भूगोल द्वारा निर्धारित होती है और हम पाकिस्तान की भौगोलिक स्थिति से भलीभांति परिचित है।

.....युद्ध होगा या नहीं होगा? यह प्रश्न तो भविष्य के गर्भ में छिपा है, पर लोगों को सोचना होगा कि युद्ध न तो कोई तमाशा है और न ही कोई मनोरंजन का साधन। युद्ध में मासूम लोग मरते हैं, युद्ध से जमीने बंजर होती है, घायलों की कराह होती है, चारों ओर हाहाकार होती है, हर एक घटना के बाद भारत और पाकिस्तान की जनता युद्ध-युद्ध चिल्लाती है। कारण इन दोनों देशों ने अभी तक युद्ध देखा ही नहीं है। युद्ध के बारे में सिर्फ पढ़ा है।..... युद्ध देखा है लाओस वियतनाम इराक ने या युद्ध की त्रासदी झेली है जापान ने उनसे पूछो क्या होता है युद्ध? यूरोप के देशों से पूछो क्या होता है युद्ध? हालाकि मैं ये नहीं कहता कि इस डर से नपुंसक बन कर जियो। नहीं! जैसी स्थिति हो वैसा प्रहार करो।.....

हमेशा इस तर्क के सहारे युद्ध किये जाते रहे हैं कि शांति के लिए युद्ध जरूरी है। किन्तु युद्ध के बाद अमन या शांति का केवल नाम होता है। दरअसल उसके पीछे रुधे गले की खामोशी छिपी होती है। न हमें अभी तक नाभकीय युद्ध का अंदाजा है न पाकिस्तान को। दोनों देशों की मीडिया रात दिन युद्ध पर बहस कर रही है जबकि इस बात का सबको पता है कि दूसरे विश्व युद्ध को करवाने में यदि सबसे अहम रोल किसी का रहा था तो वो उस समय की मीडिया का रहा था। जो राजनेताओं को ताने देने लगी थी। नपुंसक और कायर तक लिखने लगी थी। आज भी मुझे कुछ ऐसा ही दिखाई दे रहा है। आज फिर मीडिया मानचित्रों को लेकर उन पर हमले कर रही है पर भूल जाती है कि मानचित्रों पर कलम चलाने से भूगोल नहीं जीते जाते उसके लिए रक्त से धरा लाल होती है। माताओं को लाल, बहनों को भाई और पत्नी को अपनी मांग का सिंदूर लुटाना पड़ता है। किन्तु इस युद्ध को तो हम धरा को लाल किये बिना भी दुश्मन से जीत सकते हैं उसकी निर्भरता पर वार कर सकते हैं।

अभी एक रिपोर्ट पढ़ रहा था कि क्या बलूचिस्तान का मामला उठानेवाले भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सिन्धु जल संधि के मुद्दे को आतंकवाद, दाउद इब्राहीम और हाफिज सईद से जोड़ने का साहस करेंगे! अंतर्राष्ट्रीय कानून की मान्यता है कि बदली हुई परिस्थितियों या घटनाओं के आधार पर कोई भी संधि भंग की जा सकती है। जिस प्रकार पाकिस्तान अपनी सीमा में भारत के खिलाफ आतंकवादी समूहों को पाल-पोस रहा है, यह अपने आप में सिन्धु जलसन्धि (आई डब्ल्यू टी) भंग करने का पर्याप्त आधार है। सिंधु पाकिस्तान के गले की नस है। यदि भारत पाकिस्तान को अपने व्यवहार में सुधार लाने और आतंकवादियों का निर्यात रोकने के लिए विवश करना चाहता है तो आई डब्ल्यू टी भंग करने से अच्छा कारगर उपाय कोई नहीं! भारत के पास इस एक तरफा लेकिन अनिश्चितकालीन संधि को भंग करने के पर्याप्त अन्तर्राष्ट्रीय कानूनी विकल्प मौजूद हैं। अमेरिका और रूस के बीच हुई ऐसी ही एक अनिश्चितकालीन अवधि की एंटी-बैलिस्टिक मिसाइल संधि को अमेरिका ने भी बाद में वापस लिया था। ऐसे समय में जब दोनों देशों के पास परमाणु शस्त्र हैं और पाकिस्तान का रक्षा मंत्री खुलकर उनके प्रयोग की धमकी देता रहता है, उडी आतंकी हमले के बाद पानी कार्ड का अस्त्र ही भारत के लिए सबसे कारगर उपाय हो सकता है। दक्षिण एशिया के विशेषज्ञ स्टीफन कोहन का मानना है कि भारत-पाकिस्तान की कलह दुनिया के उन विवादों में एक है, जिनका निपटारा नहीं हो सकता है। हो सकता है कि कभी खत्म भी न हो। उन्होंने बीबीसी से कहा है, कि 'यह ऐसा विवाद है जो पाकिस्तान जीत नहीं सकता और भारत हार नहीं सकता। ''इसके बाद भी सब जानते हैं भारत की विदेश नीति के निर्धारण में एतिहासिक परम्पराओं की भूमिका सराहनीय है। भारतीय दर्शनशास्त्र की सद्भावना उदारता और मानवतावादी सिद्धांत पर आधारित है। हम कमजोर नहीं किन्तु फिर भी अपनी इस परम्परागत नीति का अनुसरण करते हैं कि जियो और जीने दो। यदि इस सबके बावजूद भी कौरवों की समझ में नहीं आता तो पांडवों को युद्ध के लिए तैयार रहना होगा।

-राजीव चौधरी

केरल के गुरुकुल में कार्यशाला एवं शिविर सम्पन्न

केरल के ऋषिराम आर्योपदेशक गुरुकुल में दिनांक 16 से 18 सितम्बर 2016 के मध्य सत्यार्थ प्रकाश वैदिक कार्य शाला (शिविर) का आयोजन किया गया जिसमें होशंगाबाद (म.प्र.) के आचार्य श्री आनन्द पुरुषार्थी, डॉ. पी. के. माधवन संस्कृत प्रवक्ता एवं सेवा निवृत्त, प्राचार्य डॉ. श्रीनाथ करियाट मनोवैज्ञानिक एवं षोडश संस्कार वेत्ता, डॉ. शशि कुमार एम.डी. आयुर्वेद आदि ने नैरोग्य, अंधविश्वास एवं कुरीति निर्मूलन, ईश्वर आदि पर मलयालम में उपदेश दिए व शंका समाधान किया। वैदिक विद्वान आचार्य आनन्द पुरुषार्थी एवं के एम. राजन ने उपदेशों का हिन्दी अनुवाद किया।

गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने प्रतिदिन यज्ञ करवाया और अंतिम दिन आसन-व्यायाम का प्रदर्शन किया। गुरुकुल अधिष्ठाता श्री के. एम. राजन ने 25 दिसम्बर को वार्षिकोत्सव एवं आर्यवीर दल के शिविर की सूचना दी।

- संयोजक

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

प्रथम पृष्ठ का शेष

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल.....

महामहिम आचार्य देवव्रत जी थे। सम्मेलन में उपस्थित विशाल जन समूह को श्री इन्द्रजीत देव जी, श्री विनय आर्य जी, डॉ. राजेन्द्र विधालंकार जी एवं आचार्य देवव्रत जी के अतिरिक्त श्रीमती रानी आर्या, श्रीमती सुमन सूद, श्रीमती हेमा आर्या ने भी सम्बोधित किया।

दिनांक 17 सितम्बर को एक विशाल शोभा यात्रा सुन्दरनगर के मुख्य स्थानों से निकाली गई जिसमें डी.ए.वी. सुन्दरनगर, नेर चौक एवं हमीरपुर के छात्रों/अध्यापकों ने भी भाग लिया। यद्यपि शोभा यात्रा के दौरान भारी वर्षा आ गई तथापि आर्य जनों का उत्साह दर्शनीय रहा। वर्षा में भीगते हुए आर्य जन महर्षि दयानन्द की जय, आर्य समाज अमर रहे के नारे लगाते हुए चलते रहे और हजारों की संख्या में से एक छोटे बच्चे ने भी भागना उचित न समझा। आर्य जनों की यह धीरता सभी के लिये अनुकरणीय रही।

सम्मेलन में पधारने पर अचार्य देवव्रत जी को स्मृति चिह्न प्रदान करते सर्वश्री रामफल आर्य जी, प्रबोध सूद जी, महामन्त्री श्री विनय आर्य जी, ओ.एस.डी. राजेन्द्र विद्यालंकार जी एवं आचार्य आर्यनरेश जी। इस अवसर पर दिल्ली सभा के सहयोग से तैयार किए गए वेद प्रचार वाहन के साथ महामन्त्री श्री विनय आर्य जी एवं हिमाचल सभा के पदाधिकारिगण।

सम्मेलन में डी.ए.वी. विद्यालय सुन्दरनगर एवं कण्डाघाट के बच्चों की प्रस्तुतियां अत्यन्त सराहनीय रही। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य आर्य नरेश जी रहे तथा पूरे सम्मेलन के सभी कार्यक्रमों के संयोजक श्री रामफल सिंह आर्य महामन्त्री रहे। इस सम्मेलन को सफल बनाने के लिये विभिन्न प्रबन्धक समितियों का गठन किया गया था, जिनकी प्रधानता सर्वश्री शमशेर सिंह आर्य, शयामदेव उप्पल, श्रवण कुमार आर्य संचालक आर्य वीर दल पवन आर्य आदि ने की तथा इनका पुरुषार्थ वास्तव में स्तुत्य रहा।

यह सम्मेलन एक अमिट छाप हिमाचल वासियों के हृदय पर अंकित कर गया जिसकी स्मृतियां देर तक उनके मन में रहेगी। पण्डाल की भव्यता एवं भोजन व्यवस्था देखते ही बनती थी। बिना लहसुन प्याज एवं लाल मिर्च के शुद्ध सात्विक भोजन ने सभी को आनन्दित किया। इस अवसर पर आर्य समाजों के अधिकरियों/कार्यकर्ताओं को भी स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

– रामफल सिंह आर्य,
महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा,

विराट जनजातीय वैदिक महासम्मेलन : 19-21 नवम्बर आसाम-नागालैंड

सम्मेलन में भाग लेने के इच्छुक महानुभाव अभी से अपनी रेल/हवाई यात्रा की टिकटें स्वयं आरक्षित करवा लेवें। सम्मेलन में पहुंचने, व्यवस्थाओं/सुविधाओं के सम्बन्ध में अधिक जानकारी के लिए श्री जोगेन्द्र खट्टर 9810040982 से सम्पर्क करें।

मैं आर्यसमाजी कैसे बना?

श्री केवल यादव की प्रेरणा से मैं आर्यसमाजी बना

– कामता प्रसाद आर्य

मेरा जन्म बढ़ई परिवार में हुआ। मेरे पिता का नाम श्री गंगा दयाल शर्मा व माता का श्रीमती धनवती था। मेरा परिवार अशिक्षित होने के कारण मेरी शिक्षा भी 7वीं क्लास तक ही हो सकी। मेरा विवाह 17-18 वर्ष में ही हो गया था। पिताजी की ओर से दबाव पड़ने के कारण मैं मजूरी करने लगा। हमारे पिताजी ओझाई यानि भूत-प्रेत का झाड़-फूंक करते थे प्रत्येक रविवार को घर में देवास लगाकर झाड़-फूंक होता था। शराब, बकरा, कबूतर को मार कर चढ़ावा होता रहता था। मैं इस कार्य से बहुत भय-भीत होता था। मैं डर की वजह से घर में रामायण की चौपाई और हनुमान चालीसा का पाठ जोर-जोर से करता था। मुझे रामायण पढ़ते देख मोहल्ले के श्री केवल यादव ने कहा 'अच्छा पढ़ते हो, एक किताब है सत्यार्थ प्रकाश उसको पढ़ो तो मैंने पूछा सत्यार्थ प्रकाश कहां मिलेगा तो उन्होंने बताया कि हमारे पास था, न जाने क्या हो गया अब नहीं है।'

समय बीतता गया। एक दिन मिठाई की दुकान से खाने के लिए मिठाई खरीदा। मैं कागज पर रखी मिठाई खा रहा था जिस कागज पर मिठाई रखी थी उस पर अचानक मेरी निगाह पड़ी उस पर छोटे-छोटे अक्षरों में लिखा था 'सत्यार्थ प्रकाश' मैं फिर मिठाई की दुकान पर गया और दुकानदार से एक आना में उस फटी हुई किताब को खरीद लिया। उसके 20-25 पन्ने फटे हुए थे। मैंने उन्हें ध्यान से पढा। उसके बाद गांव के लोग मुझे नास्तिक कहने लगे। मेरा हर तरह से विरोध होता रहा मुझे डराने के लिए लोगों ने मुझे शमसान भूमि में आधी रात को भेजा।

एक बार पटना सिटी के मारूफ गेज के एक मकान में काम करने के लिए तीन आदमी आरा से गये थे मैं जिसके यहां काम करता था वह पति-पत्नी दोनों झाड़-फूंक करते थे। हमारे साथी ने मकान मालिक से कहा कि 'कामता भूत-प्रेत नहीं मानता तो मकान मालिक ने बोला मैं कामता को एक लवंग अछत से मारकर प्रेत द्वारा तड़पा दूंगा तो मैं कहा कि कहना क्या है करके दिखा दो। एक रविवार को पचना पखाउज बजाने वाले को बुलाकर मंत्र उच्चारण करते हुए मेरे शरीर पर अछत लवंग फेंक कर मुझे बहुत तरह से भ्रम में डालना शुरू किया, फिर भी मेरे ऊपर कोई असर नहीं होता देखकर पटनदेवी कलकत्ता की काली और कामाख्या देवी के नाम से मंत्र पढ़कर डराने का प्रयास किया तो हार कर कहा कि 'कामता के शरीर पर बहुत बड़ा पिसाच रहता है।' तो मुझे हंसी आ गयी। मैंने कहा ठीक कहा मैं उस पिसाच का नाम बताता हूं, उस पिसाच का नाम है महर्षि दयानन्द वही हमारे शरीर पर हर वख्त विराजमान रहता है।' इतना सुनते ही ओझा ने हमारे साथी से बोला 'तुम लोग पहले क्यों नहीं बताये कि कामता आर्य समाजी है।' इसी तरह से

मैं आडम्बर के खिलाफ संघर्ष करता रहा।

मैं नित्य प्रति आर्यवीर दल में जाता था आर्यवीर दल के शिक्षक सरयू प्रसाद और रघुवीर प्रसाद के सान्धिय में रहकर शस्त्र, लाठी-भाला, तलवार, व्यायाम, प्राणायाम, आसन करना सीखा। दोनों महानुभावों के गुजरने के बाद मैं आर्यवीर दल का संचालक बन गया। आर्यवीर दल के सार्वदेशिक संचालक श्री ओम प्रकाश त्यागी जी से मुझे बहुत प्रेरणा मिली। डॉ. देववृत आचार्य जी ने मुझे प्रान्तीय संचालक के पद पर नियुक्त कर दिया तो मैंने पूरे प्रान्त में आर्यवीर दल का प्रचार व विस्तार करना शुरू कर दिया। श्री विजय आर्य, श्री सुरेश विश्वकर्मा, श्री सुबोध आर्य और गायत्री देवी, विरेन्द्र आर्य के सहयोग से टाटा टेल्को, नरकटियागंज, चम्पारण, भेड़हारी, नेपाल और वीरगंज नेपाल में शिविर लगाए। बिहार के तत्कालीन प्रधान श्री भूपनारायण शास्त्री ने मुझे खर्चे के लिए दो हजार रुपये महीना दिये मैं आर्यवीर दल का प्रचार-प्रसार करता रहा।डी.ए.वी. की ओर से सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव का आयोजन कराकर स्वामी दयानन्द के कार्य को आगे बढ़ाने का शंखनाद आरा से हुआ। मैं इसमें अपना सामर्थ के अनुसार भरपूर सहयोग दिया। अमर आत्मा महात्मा हंसराज ने आर्य निर्माण हेतु लाहौर में डी.ए.वी. स्कूल की स्थापना की जो आरा भोजपुर की धरती से शंख नाद हुआ इस शंख नाद की गूंज विश्व में गूंजती हरे यही मुझे आशा है।

–भलुहीपुर आरा भोजपुर (बिहार)

आपके साथ ऐसा क्या हुआ कि आप आर्यसमाज की ओर आकर्षित हुए। यदि आपने भी किसी की प्रेरणा/विचारों से प्रभावित होकर आर्यसमाज में प्रवेश करके वैदिक संस्कृति को अपनाया है तो यह कॉलम आपके लिए ही है। आप अपनी घटना/ प्रसंग अपने फोटो के साथ हमें लिखकर भेजिए। आपके विवरण को युवाओं की प्रेरणा एवं जानकारी के लिए आर्यसन्देश साप्ताहिक में प्रकाशित किया जाएगा। हमारा पता है-

'सम्पादक' - साप्ताहिक आर्य सन्देश,
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 email : aryasabha@yahoo.com

एक दिन ऐसा जिसने फिर झकझोरा मुझे

पूछा सवाल मेरी आत्मा ने,
वजूद क्या तेरे अस्तित्व का ये बता मुझे।
एक फूल सी मासूम जान ने,
आंखे दुनिया में खोली।
मिलनी थी गोद मां की,
पर पनाह उसे झाड़ियों ने दी।
हाथ भी लगाने से डर लगता हो,
जिस नाजुक बदन को।
उसे कंकरों से थी दुलार मिली,
क्या खता थी उसकी।
जो सजा ऐसी भयावह मिली,
खता तो है पर उसकी नहीं।
है उसकी जिसने उसे बनाया 'लड़की',
पर किस्मत उसकी दगाबाज हुई।
सजा मिलनी थी किसे और,
ना इंसाफी किसके साथ हुई।
कौन करेगा फैसला अब,
जिसने किया उसका कोई पता नहीं।
जिसे कुछ पता नहीं,
वो सबके सामने शर्म सार हुई ।

– सोनिया रानी, बड़ौत

Glimpses of the SamaVeda

- Priyavrata Das

Continue from last issue :-

The Night has come

"O traveller, your journey of this life is coming to an end. The mid-day of youth has gone, so has the afternoon of adult age. The evening is discending fast. But remember, the journey has no end. Till you get liberated, you will have to travel birth after birth around an endless life cycle. The relationship as of husband-wife, parent-children and possessions like property, fame, power all cease with death. After death, a new relationship starts. You have been able to gain a valuable experience of one life. This is your fulfilment."

"O traveller, get determined to rectify the mistakes of the present life in your next birth. The old age is not dark. It illuminates your mind regarding the purpose of human life. The other beings pass through the human body for attaining liberation. Those who wrongly use the human body, go to the prison-house of lower life. They regain human body after expiry of period of punishment."

"O traveller, in the past you have seen many worlds and you may see many in future also. Remember, to get closer to the Lord each life provides an opportunity. An ignorant person does not understand the significance of the sandal tree, so he burns the sandal wood and sells the charcoal. When a well-wisher explains the importance of sandal wood, he sells the rest of the tree as sandal wood and gets large profit. Make efforts to enrich the rest of your life and be happy."

दोषो आगाद् बृहद्र य द्युमद्र मन्नाथर्वण।
स्तुहि देवं सवितारम्।। (Sv.177)

Doso agad brhadgaya dyumadgamann atharvana.
stuhi devarm savitaram..

Samadhi

In the Vedic incantation Jivatma has been indicated as 'Indu" and Paramatma as "Indra". Indu is illuminated when he totally surrenders to Indra. Indra is bodyless and all-pervading whereas Indu lives inbody and uses it to purpose. Due to ignorance he does not realize his identity and feels the desires and passions of the body to be his own.

When a child sits on his mother'slap with his back towards the mother, he can't see her. Likewise as the embodied soul is engaged in the organs of sense, he cannot feel the Lord seated in his own heart.

In the waking state, the sense organs of the body are busy in acquiring pleasure out of the world. Mind travels here and there. In the state of dream, although the senses take rest, yet the mind remains mobile. The functions of the senses and of the mind remain suspended. There is scope of union of the Soul and God. But the ignorant soul cannot recognize the one dearest and closest to him. So he loses the opportunity. It is only after continuous and sincere practice of Yoga that the soul meets God and derives Joy. Sadhana is tough and time-taking, yet it is the only tool to realize God.

नमसेदुप सीदत दध्नेदभि श्रीणीतन।
इन्दुमिन्द्रे दधातन।। (Sv.1446)

Namased upa sidata dadhned abhi srinitana.
indum indre dadhatana..

The crooked is punished.

"Surely you do not acknowledge friendship of the arrogant wealthy man. Those who are puffed up with the wind offend you. When invoked as protector, you promote sacred worship and expel niggardliness. You seek company of one who loves to fight against the odds of life."

"The person who hides himself crookedly and who seizes our wealth and offers it to others, who deems himself a hero, and yet boasts of his liberality, O resplendent Lord, give us strength to fight against him. You are the wielder of punitive justice."

न की रेवन्तं सख्याय विन्दसे पीयन्ति ते सुराश्वः।
यदा कृणोषि नदनुं समूहस्यादित्पितेव हूयसे।। (Sv.1390)

Na ki revantam sakhyaya vindase piyanti te surasvah.
yada krnosi nadanum samuhasyadit piteve huyase..

यो नो वनष्यन्नभिदाति मर्त्त उगणा वा मन्यमानस्तुरो वा।
क्षिधी युधा शवसा वा तमिन्द्राभी ष्याम वृषमण स्त्वोताः। (Sv.336)

Yo no vanusyannabhidati martta ugana va manyamanasturo va.
ksidhi yudha savasa va tamindrabhi syama vrsamanastvotah..

To be Conti....

आओ संस्कृत सीखें

संस्कृत पाठ – 12 : पुनरावृर्त्ति कार्य

–आचार्य संदीप कुमार उपाध्याय

गतांक से आगे....

संस्कृत और उनके हिन्दी समतुल्य वाक्यों को ध्यान से देखें और पढ़ें।

संस्कृत	**हिन्दी**
१. अहं रुपा।	मैं रुपा।
२. अहं चित्रा।	मैं चित्रा।
३. अहं गच्छामि।	मैं जाता हूँ।
४. अहं खादामि।	मैं खाता हूँ।
५. गच्छामि।	मैं जाता हूँ।
६. खादामि।	मैं खाता हूँ।
७. अहं वदामि।	मैं बोलता हूँ।
८. अहं पठामि।	मैं पढता हूँ।
९. वदामि।	मैं बोलता हूँ।
१०. पठामि।	मैं पढता हूँ।

अहम् या अहं : ''अहम्'' या ''अहं'' संस्कृत में 'मैं' के लिए इस्तेमाल किया जाता है। इसलिए ''अहं रूपा'' (वाक्य-१) बन गया ''मैं रूपा'' और ''अहं चित्रा'' (वाक्य-२) बन गया 'मैं चित्रा''।

गच्छामि : गच्छामि अथवा अहं गच्छामि अर्थात् मैं जाता हूँ। अगर आप ध्यान से पढ रहे हैं तो आपने अवश्य सोचा होगा कि अगर गच्छामि का मतलब ''मैं जाता हूँ'' है तो अहं की आवश्यकता नहीं है। तो आपने बिल्कुल सही सोचा है। अगर आप खाली गच्छामि बोलेंगे तो भी उसका अर्थ ''मैं जाता हूँ'' ही होगा। पर ऐसा क्यूँ?– इसका खुलासा अगले पाठों में होगा।

खादामि : खादामि मतलब मैं खाता हूँ। जैसे गच्छामि अथवा अहं गच्छामि अर्थात् मैं जाता हूँ वैसे ही खादामि अथवा अहं खादामि अर्थात् मैं खाता हूँ। तो यहाँ भी अहं की आवश्यकता नहीं है।

वदामि : वदामि अथवा अहं वदामि अर्थात् मैं बोलता हूँ।

पठामि : पठामि अथवा अहं पठामि अर्थात् मैं पढ़ता हूँ।

गम् (Go) लट् लकार (Present Tense)

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**
प्रथम	गच्छति	

गम् (Go) लट् लकार (Present Tense)

पुरुष	**एकवचन**	**द्वि. बहु.**
प्रथम	गच्छति	
मध्यम	गच्छसि	
उत्तम	गच्छामि	

पुरुष	**एकवचन**	**द्वि. बहु.**
प्रथम	सः (पु०)	
	सा (स्त्री०)	
	तत् (न०)	
मध्यम	त्वम्	
उत्तम	अहम्	

गम् धातु – गम् एक धातु है। धातु को आप एक मूल शब्द की तरह समझिए। इस एक गम् शब्द से बहुत सारे शब्द बनाए जा सकते हैं। जैसे गच्छामि, गच्छसि, गच्छति, आगच्छामि आदि। ये सब शब्द धातु के पहले उपसर्ग (Prefix) और प्रत्यय अधिक धातुओं को मिलाकर और फिर उपसर्ग और प्रत्यय लगाकर अनेकों अनेक शब्द बना सकते हैं। फिलहाल के लिए इस स्पष्टीकरण को समझें, धातु के ऊपर हम फिर विस्तार से चर्चा करेंगे।

पुरुष : संस्कृत वाक्य बनाने से पहले मैं आपको उत्तम, मध्यम और प्रथम पुरुष की जानकारी देना चाहता हूँ।

प्रथम पुरुष : जब श्रोता के अतिरिक्त किसी अन्य पुरुष के लिए बात की जा रही हो तो उसे प्रथम पुरुष कहते हैं। जैसे- वह, वे, उसने, यह, ये, इसने, आदि। जैसे – वह लड़का जा रहा है, वह 2 चीजें वहाँ पड़ी हैं, उसने/सबने हाथ में फल लिए हुए हैं।

मध्यम पुरुष : जब बोलने वाला श्रोता के लिए बात कर रहा हो, उसे मध्यम पुरुष कहते हैं। जैसे – तू, तुम, तुझे, तुम्हारा आदि। जैसे तुम क्या करते हो, तुम कहाँ जाते हो, तुम्हारा क्या नाम है, तुम दोनों क्या कर रहे हो, तुम सब भागते हो।

उत्तम पुरुष : जब बोलने वाला अपने लिए बोल रहा हो उसे उत्तम पुरुष कहते हैं। जैसे – मैं, हम, मुझे, हमारा आदि। जैसे मैं खाता हूँ, मैं वहाँ जाता हूँ, मैं सोता हूँ, हम सब लिखते हैं, हम दोनो खुश हैं।

संस्कृत वाक्य : हमने पिछले पाठ में सीखा था कि ''अहम् गच्छामि'' का मतलब ''मै जाता हूँ'' है। आप ऊपर की तालिकाओं (Tables) में देखें कि दोनों (''अहम्'' और ''गच्छामि'') ही शब्द उत्तम पुरुष की श्रेणी में आते हैं (रंग से रंग मिलाइए जनाब)। उत्तम पुरुष को अंग्रेजी में First Personभी कहते हैं। नीचे दिए गए वाक्यों को ध्यान से पढें। –

1. अहं गच्छामि
2. त्वं गच्छसि
3. सः गच्छति
4. सा गच्छति
5. तत् गच्छति

स्पष्टीकरण

1. अहं गच्छामि मैं जाता हूँ।

2. त्वं गच्छसि

''त्वं'' अर्थात् तू , तुम या आप। ''गच्छसि'' अर्थात् ''तू जाता है''। एक बार फिर ऊपर की तालिकाओं में देखें कि दोनों (''त्वं ''और''गच्छसि'') ही मध्यम पुरुष की श्रेणी में आते हैं। आप मध्यम पुरुष (Second Person) का प्रयोग अपने सम्मुख व्यक्ति के लिए करते हैं। स्वयं के लिए ''अहं'' का प्रयोग करें।

यह भी ध्यान रहे कि उत्तम पुरुष क्रिया (Verb) को उत्तम पुरुष सर्वनाम/संज्ञा (Pronoun/Noun) के साथ ही प्रयोग करें, अर्थात्

गलत	**सही**
अहं गच्छसि	अहं गच्छामि
त्वं गच्छामि	त्वं गच्छसि

3. सः गच्छति

''सः'' (He) अर्थात् वह या वो। ''गच्छति'' अर्थात् ''वह जाता है''। सः को पुलिङ्ग के लिए ही उपयोग किया जाता है। कोई लड़का या आदमी जाता हो तो ही आप सः गच्छति का उपयोग कर सकते हैं।

4. सा गच्छति : स्त्रीलिङ्ग के लिए सा (She) का प्रयोग किया जाता है। सा गच्छति अर्थात् वह जाती है।

5. तत् गच्छति : नपुसंकलिङ्ग के लिए तत् (It) का उपयोग किया जाता है। तत् गच्छति।

इस पाठ में हमने केवल एकवचन पर ध्यान केन्द्रित किया। अगले पाठ में हम द्विवचन और बहुवचन पर गौर करेंगें।

आर्यसमाज पूर्वी शालीमार बाग में यज्ञ एवं वेद कथा सम्पन्न

आर्य समाज बी.एन. पूर्वी शालीमार बाग, नई दिल्ली प्रांगण में 7 से 11 सितम्बर 2016 तक यज्ञ एवं वेद कथा श्रावणी उपाकर्म के उपलक्ष्य में आयोजित की गई। यज्ञ महोत्सव आचार्य वेद प्रकाश जी पूर्व उपकुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के सान्निद्ध में धर्माचार्य प्रद्युम्न शास्त्री ने सामवेदीय ऋचाओं से यज्ञ सम्पन्न कराया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने कहा कि 'वेद विश्व विज्ञान का आधार सभी सत्य विद्याओं का मूल है। यदि कोई विशालकाय वृक्ष अपने मूल से कट जाता है तो वह सूख ही नहीं जाता बल्कि धराशायी भी हो जाता है। आज इस आधुनिक विज्ञान की चकाचौंध में अपनी सन्तति को अपने मूल से न जोड़कर अपने धर्म संस्कृति और आदर्शों की अवहेलना कर दु:ख सागर की ओर अग्रसर हो रहे हैं। हमें महर्षि दयानन्द एवं वेद के मंतव्यों को आचरण में लाकर स्वजीवन को श्रेष्ठ बनाना और अन्यों को भी लाभान्वित करना है।'

सभा महामंत्री श्री विनय आर्य ने कहा कि 'आर्यसमाजियों को चार दीवारियों से बाहर निकलकर वेद एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती के मिशन को आगे बढ़ाना है क्योंकि आर्य समाज एक संस्था नहीं एक विचार है, एक प्रेरणा है, एक क्रांति है जो सर्वेभवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामय: की भावना से कार्य करता है।'

डॉ. महेश विद्यालंकार जी ने प्रेरणाप्रद शब्दों में मनुष्य धर्म का पालन और उसकी रक्षा का बखान किया।

डॉ. धर्मपाल ने कहा 'वेद के अनुसार आचरण से ही हमारा कल्याण सम्भव है।' अन्त में प्रधान श्री भूदेव शर्मा ने सभी का धन्यवाद किया। **-प्रद्युम्न आर्य**

आर्य समाज मंदिर हंसापुरी, नागपुर में श्रावणी पर्व सम्पन्न

आर्य समाज हंसापुरी, नागपुर (महाराष्ट्र) का 8 दिवसीय श्रावणी पर्व समारोह बड़े धूमधाम से संम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ ऋग्वेद,यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद मंत्रों से हुआ। यज्ञब्रह्मा पं. कृष्ण कुमार शास्त्री थे। मातृशक्ति अमृता शास्त्री ने अपने मधुर भजनों द्वारा वेदों के पवित्र ज्ञान व महर्षि दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डाला। महर्षि दयानन्द कान्वेंट की शिक्षिकाओं एवं चैरिटेबल अस्पताल के स्टाफ ने अपना भरपूर सहयोग प्रदान किया। *- मन्त्री*

आवश्यकता है

आर्य समाज, नीलोखेड़ी जिला करनाल, हरियाण को धर्माचार्य/पुरोहित की पूर्ण कालिक के लिए आवश्यकता है। मासिक वेतन योग्यतानुसार ही दिया जाएगा। अत: पूर्ण कालिक समय देने वाले ही आवेदन करें- **प्रधान: 9416246560, 07145-246845**

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज वेद मन्दिर
सी.पी. ब्लाक, पीतमपुरा, दिल्ली
प्रधान : श्री भरत पाल भगत
मन्त्री : श्री सोहन लाल आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री राकेश ठुकराल

वेद प्रचार कार्यक्रम

आर्य समाज नांगलराया का वेद प्रचार कार्यक्रम 30 सितम्बर से 2 अक्तूबर 2016 तक आयोतिज किया जा रहा है। इस अवसर पर यज्ञ एवं भक्ति संगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाएगा।

-ओम प्रकाश प्रेमी, मंत्री

वैवाहिक विज्ञापन

आर्य वधु चाहिएं

उ. प्रदेश के प्रतिष्ठित आर्य परिवार के तीन युवकों के लिए सुन्दर, शाकाहारी, आर्य विचारों वाली, आर्य परिवार की कन्याएं चाहिंए। जाति बन्धन कोई नहीं।

30 वर्षीय, 5'-10'' M.A. P.H.D., 10 Lac P.A., Yoga Teacher (Mumbai)
27 वर्षीय, 5'-8'', M.A. M.ed., 10 Lac P.A., Yoga Teacher (Mumbai)
25 वर्षीय, 5'-9'', Working with N.D.R.F. in Cuttak, 5 Lac P.A.

इच्छुक आर्य परिवार सम्पर्क करें:-

- श्री राम मूरत आर्य,
रेलवे क्रासिंग मालीपुर, अम्बेडकर नगर मो. 9415535059, 7666666991

वैवाहिक विज्ञापन

वधू चाहिए

आर्य परिवार का सुन्दर, पतला, गोरा, शुद्ध शाकाहारी, गर्ग अग्रवाल लड़का 28 जून 90, 7.10 बजे अम्बाला। कद 5'-9'', B.Tec (CSE) Working in Gurgaon MNC, Sr. Software Developer, 8 Lac PA, के लिए सुन्दर, गोरी, पतली, कार्यरत, आर्य परिवार की कन्या चाहिए। इच्छुक व्यक्ति फोटो बायोडाटा भेजें। **सम्पर्क : 094161-87411**

Email : arya.travels01@gmail.com

- शिव आर्य, मन्त्री, आर्यसमाज बराड़ा, अम्बाला (हरि.)

आर्यसमाज न्यू मुल्तान नगर की नवनिर्मित यज्ञशाला, वैदिक पुस्तकालय एवं अतिथि कक्ष का उद्घाटन

आर्य समाज मन्दिर न्यू मुल्तान नगर, दिल्ली दिनांक 13 से 16 अक्टूबर 2016 के मध्य नवनिर्मित यज्ञशाला, वैदिक पुस्तकालय एवं अतिथि कक्ष का उद्घाटन समारोह आयोजित कर रहा है। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाशय धर्मपाल जी चेयरमैन एम.डी. एच. एवं मुख्य अतिथि कैप्टन अभिमन्यु जी होंगे। कार्यक्रम का उद्घाटन प्रथम भारतीय अंतरिक्ष यात्री श्री राकेश शर्मा जी द्वारा होगा।

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहंचकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं *- मन्त्री*

गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित कराने हेतु प्रदर्शन

सर्वदलीय गोरक्षा मंच भारत के तत्त्वावधान में समस्त गो भक्त व समितियां 7 नवम्बर 2016 को जंतर-मंतर रोड पर विशाल प्रदर्शन करेंगी। यह कार्यक्रम 1 नवम्बर से 8 नम्बर 2016 तक चलेगा। प्रदर्शन का उद्देश्य है लोक सभा में गाय को राष्ट्रीय प्राणी घोषित किया जाए साथ ही विश्व ग्रन्थ वेदों को राष्ट्रीय ग्रन्थ घोषित करने सम्बन्धी प्रश्न लोक सभा अध्यक्ष से लेकर अनेक केन्द्रीय मंत्रियों, सांसदों से लोक सभा में किये जाने का प्रस्ताव रखा जाएगा। नागरिकों से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक संख्या में भाग लेने की कृपा करें। *- ठा. जयपाल सिंह, राष्ट्रीय अध्यक्ष, 09889702915*

त्रिदिवसीय वैदिक महोत्सव

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, वाराणसी के तत्त्वावधान में महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ का 147वां त्रिदिवसीय वैदिक महोत्सव दिनांक 7 से 9 नवम्बर 2016 के मध्य आनन्द बाग दुर्गाकुण्ड, वाराणसी में आयोजित किया जा रहा है।

- सुरेन्द्र सिंह आर्य, संयोजक

आर्य समाज भोजपुर-खेड़ी का 102वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज भोजपुर-खोड़ी (बिजनौर) का 102वां वार्षिकोत्सव दिनांक 24 से 26 सितम्बर 2016 के मध्य आयोजित किया गया। इस अवसर पर श्री अग्निहोत्री जी ने प्रवचन एवं सुश्री अलका आर्या ने भजन प्रस्तुत किए। इस अवसर पर पूरे क्षेत्र में दिनांक 23 सितम्बर को शोभायात्रा एवं शराब बन्दी जागरण यात्रा निकाली गई। *- मन्त्री*

अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति प्रदान समारोह

मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा इस वर्ष 13 नवम्बर 2016 को छोटूराम धर्मशाला (पार्क), सिविल रोड, छोटूराम चौक, रोहतक (हरियाणा) में विद्वान्-विदुषियों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं का अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति वितरण समारोह का आयोजन किया जा रहा है। समारोह का उद्घाटन डॉ. सुरेन्द्र शास्त्री तथा अध्यक्षता श्री आजाद सिंह लाकड़ा करेंगे।

- रामपाल शास्त्री

शोक समाचार

आचार्य विजयपाल जी को मातृशोक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के उप प्रधान आचार्य विजयपाल जी की पूज्य माताजी श्रीमती भरतो देवी जी धर्मपत्नी महाशय बलवन्त सिंह आर्य जी का दिनांक 18 सितम्बर, 2016 को लगभग 96 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार किया गया। वे अपने पीछे आर्य पुत्रों का भरा-पूरा परिवार छोड़ गई हैं।

श्री संजीव पुरी जी को पितृ शोक

आर्य समाज गाँधी नगर के प्रमुख सदस्य श्री संजीव पुरी के पिता श्री जगदीश राय पुरी का गत दिनों एक अल्प बीमारी के उपरान्त निधन हो गया। श्री जगदीश पुरी जी के पिता आर्य समाज गाँधी नगर के संस्थापक सदस्य स्वर्गीय जसवंत राय जी पुरी थे, जिन्होंने आर्य समाज गाँधी नगर की स्थापना में बहुत बड़ा योगदान दिया। श्री जगदीश पुरी स्वयं भी अंत तक आर्य समाज से जुड़े रहे। पुरी परिवार की तीसरी पीढ़ी के रूप में श्री संजीव पुरी वर्तमान में आर्य समाज के कार्य में सक्रिय योगदान देते हैं। इस परिवार की दिनचर्या में दैनिक यज्ञ आज भी शामिल है। श्री पुरी जी की स्मृति में आयोजित श्रद्धांजली में सभा मन्त्री श्री शिवशंकर गुप्ता जी सहित आसपास की अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने उपस्थित होकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। परिवार की ओर विभिन आर्य समाजों को दान राशि भेंट की गई।

श्री अमर सिंह एवं श्री बृजसिंह को पितृशोक

आर्यसमाज क्वींसलैंड, आस्ट्रेलिया के सदस्य श्री अमर सिंह जी एवं श्री बृज सिंह जी के पूज्य पिता जी का 25 सितम्बर को प्रिंस चार्ल्स हॉस्पिटल में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से लेकविव चैपल में अगले दिन किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 26 सितम्बर से रविवार 2 अक्तूबर, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 29/30 सितम्बर, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 28 सितम्बर, 2016

आर्य समाज रोहिणी सैक्टर-7 का रजत जयन्ती समारोह 29 सितम्बर से 2 अक्तूबर, 2016

भव्य शोभायात्रा
25 सितम्बर: सायं 4 बजे से

आर्य महिला सम्मेलन
29 सितम्बर: 2:30 बजे से

25 कुण्डीय महायज्ञ समापन
2 अक्तूबर प्रात: 7:30 से 1:30 बजे
अध्यक्षता : महाशय धर्मपाल जी
मुख्यातिथि : डॉ. सत्यपाल सिंह जी

यज्ञ-भजन-प्रवचन : प्रतिदन प्रात: 7:30 से 9:15 व सायं : 7-15 से 9:30 बजे
भजन : आचार्य अंकित उपाध्याय जी

29 सितम्बर, 2016 गुरुवार
प्रवचन : डॉ. महेश विद्यालंकार जी
विषय : वेद औरा मानव जीवन का उद्देश्य

30 सितम्बर, 2016 शुक्रवार
प्रवचन : डॉ. वागीश आचार्य जी
विषय : पति-पत्नी और परिवार

1 अक्तूबर, 2016 रविवार
प्रवचन : डॉ. वागीश आचार्य जी
विषय : सुख और सफलता का आधार

आप सब सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं। निवेदक :- नरेश पाल आर्य, प्रधान संजीव गर्ग, मन्त्री

प्रतिष्ठा में,

ऋषि स्मृति सम्मेलन का आयोजन

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जोधपुर दिनांक 29 व 30 सितम्बर तथा 1 व 2 अक्टूबर 2016 को ऋषि स्मृति सम्मेलन का आयोजन न्यास भवन प्रांगण में कर रहा है। मुख्य अतिथि स्वामी धर्मानन्दजी महाराज (आबू पर्वत) होंगे। नवनिर्मित यज्ञ शाला में ऋग्वेद यज्ञ आयोजित किया जाएगा। सम्मेलन में विभिन्न विद्वान आमन्त्रित किये गये हैं।

-आर्य किशनलाल गहलोत

उपदेशक एवं शुद्धि प्रमुख संतोष आर्य जी का सम्मान

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशक एवं शुद्धि प्रमुख पुरोहित श्री संतोष आर्य का महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के धर्माबाद में हुई नियुक्ति के बाद पाणी पुरवठा एवं स्वच्छता मंत्री (महाराष्ट्र राज्य) जालना के पालक मंत्री मा. श्री बबनरावजी लोणीकर, जिलाधिकारी श्री जोधंले साहब, नगराध्यक्षा पार्वताबाई रत्नपारखे, श्री गणेश महासंघर के अध्यक्ष श्री विलास नाईक, उद्यमी श्री किशोर सेठ अग्रवाल, भाजपा जिलाध्यक्ष रामेश्वर भांदरगे ने श्री संतोष आर्य जी का सम्मान किया। यह सम्मान समारोह जिलाधिकारी कार्यालय जालना (महा.) में आयोजित किया गया, जहां शहर के अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

स्वास्थ्य चर्चा

पित्त उछलना

बरसात की उमस भरी गर्मी में अक्सर शरीर पर लाल-लाल फफोले से उभर आते हैं जिसमें तेज जलन व खुजली होती है जितना ही खुजलाएंगे उतने ही ये फफोले और बढ़ते जाते हैं। इसे पित्त उछलना कहते हैं। प्रस्तुत हैं इससे छुटकारा पाने के कुछ घरेलू नुस्खे-

1. त्रिफला पिसा 5 ग्राम शहद के साथ प्रात: सायं खाएं।
2. नागकेसर 5 ग्राम पीस कर शहद के साथ प्रात: सायं खाएं।
3. सिरका व अर्क गुलाब 100 ग्राम मिला पित्त पर मलें।
4. पहले 500 ग्राम पानी में नमक 12 ग्राम मिला कर पियें। इससे उल्टी आकर मेदा साफ हो जाएगा। फिर फिटकरी गेरू 20 ग्राम पानी में पीस कर शरीर पर लगाएं।
5. अर्क गुलाब 30 ग्राम में सिरका 20 ग्राम मिला कर पित्त पर मलें। इससे जलन खुजली ठीक हो जाएगी।
6. पोदीना 7 ग्राम लाल शक्कर 20 ग्राम को 100 ग्राम पानी में उबाल कर पिएं। इससे बार बार पित्त निकलना ठीक हो जाती है।
7. त्रिफला 120 ग्राम कूट छान लें। 6 ग्राम पानी के साथ सोते समय रात को लें और 6 ग्राम त्रिफला को 250 ग्राम पानी में रात को भिगोये। प्रात: मसल छान कर शहद मिला कर पी लें।
8. जवारिस बिसवासा या तमर हल्दी 7 ग्राम पानी में रात को सोते समय ले।
9. जवारिस जालीनूस 6 ग्राम पानी से खाना खाने के बाद दोनों समय लें।

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉ. रमण सिंह जी द्वारा ''बाल विवाह सामाजिक अभिशाप' फोल्डर का विमोचन

छत्तीसगढ़ के मुख्य मंत्री डॉ. रमण सिंह ने आर्य समाज कोटा जिला सभा द्वारा तैयार ''बाल विवाह सामाजिक अभिशाप'' फोल्डर का विमोचन किया। फोल्डर में बाल विवाह को सामाजिक कुरीति बताते हुए शारदा एक्ट की जानकारी दी गई है व बाल विवाह के ऐतिहासिक कारण तथा आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचारों का समावेश किया गया है। इसी के साथ कानूनी पहलुओं को दर्शाया गया है। इस अवसर पर कोटा-बूंदी के सांसद ओम बिड़ला, महापौर महेश विजय, राज्यसभा सांसद नारायण पंचारिया, नगर विकास न्यास अध्यक्ष रामकुमार मेहता, अर्जुन देव चड्ढा, आर.सी. आर्य, कैलाश बाहेती, प्रेमनाथ कौशल व विभिन्न आर्य नेता मौजूद थे। - ***मन्त्री***

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह